

# तज़किया कुरआन की नज़र में

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

अनुवाद

नसीम गाज़ी फ़लाही

# विषय-सूची

## तज़किया : कुरआन की नज़र में

दो शब्द	5
तज़किया कुरआन की एक परिभाषा है	7
मानी और मतलब	8
तज़किये के समानार्थी शब्द	9
दीन में तज़किये की अहमियत	11
तज़किये का व्यापक तसव्वुर	12
अक्कीदे का तज़किया	12
इबादतों का तज़किया	17
अखलाक़ और किरदार का तज़किया	18
समाज का तज़किया	19
ख़ुदा की राह में मज़बूती के साथ जमे रहना भी तज़किया है	20
सियासत (राजनीति) का तज़किया	22
तज़किया खानदानी विरासत नहीं है	24
तज़किये की तलब ज़रूरी है	25

शैतान की इताअत से बचा जाए	27
तज़किये पर घमंड न हो	28
तज़किया अपने फ़ायदे के लिए है	28
तज़किये के लिए कोशिश की जाए	29
अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने उम्मत का तज़किया किया	30
तज़किया अल्लाह अता करता है	31

“अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।”

## दो शब्द

हमें और पूरी कायनात को अल्लाह ने पैदा किया है। उसने हम इनसानों को ‘अशरफुल-मखलूक़ात’ यानी अपनी पैदा की हुई मखलूक़ में सबसे ऊँचा और बुलन्द बनाया है। अल्लाह ने अपने मंसूबे के तहत एक महदूद मुद्दत के लिए इनसानों को ज़मीन पर भेजा है। इनसान के अन्दर वे सभी ताक़तें और सलाहियतें रखी गई हैं जो उस मंसूबे और मक़सद को पूरा करने के लिए ज़रूरी हैं, जिसके लिए इनसान को भेजा गया है। इसी के साथ अल्लाह ने हमारी हर ज़रूरत का सामान भी दुनिया में जुटाया है।

इनसान हक़ीक़त में एक रूह है, जिसे एक माददी जिस्म दिया गया है। यानी इनसान जिस्म का नाम नहीं बल्कि हक़ीक़त में उस रूह का नाम है जो जिस्म में दाख़िल की गई है। इसलिए जब किसी इनसान की रूह निकल जाती है तो कहा जाता है कि वह मर गया है, हालाँकि उसका जिस्म सामने मौजूद होता है।

इनसान को इस दुनिया में भेजे जाने का मक़सद हक़ीक़त में यह है कि इनसान अपने पैदा करनेवाले और परवरिश करनेवाले खुदा की हिदायत के तहत अपनी रूह को पाकीज़ा बनाए और उसे परवान चढ़ाए और तरक्की दे। उसके अन्दर वे सिफ़ात पैदा करे जो अल्लाह को पसन्द हैं, जिनको पैदा करने और परवान चढ़ाने का उसने हुक्म दिया है। मिसाल के तौर पर यह कि वह अपने पैदा करनेवाले और पालने पोसनेवाले रब को जाने, उससे उसका ताल्लुक़ किस तरह का हो इस बात को समझे। उसके आगे हवालागी और बन्दगी का जज़्बा, सारे जानदारों के लिए रहम का जज़्बा, हमदर्दी, उनको माफ़ करने और उनकी ख़िदमत करने और उनसे मुहब्बत करने वग़ैरह के जज़्बात अपने अन्दर पैदा करे। वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करे। अल्लाह की नाफ़रमानी से बचे। धोखा, फ़रेब, झूठ, कंजूसी, जुल्म व ज़्यादती और दूसरे गन्दे कामों से दूर रहे।

हकीकत में इसी मकसद को पूरा करने के लिए अल्लाह का दीन इस्लाम आया है। उसने बड़ी तफ़सील के साथ इनसानों की रहनुमाई की है। इस्लाम ने बताया है कि अगर इनसान अल्लाह के बताए हुए रास्ते पर चलेगा यानी वे काम करेगा जिनका करने का अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद और अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने हुक़्म दिया है और उन कामों और बातों से बचेगा जिनसे रोका गया है तो फिर वह मरने के बाद अल्लाह की बनाई हुई जन्नत में दाख़िल होगा।

क़ुरआन मजीद में ऊपर लिखी हुई सिफ़ात को बयान करने के लिए बहुत से अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल किया गया है। उन्हीं में से एक लफ़्ज़ 'तज़किया' है।

तज़किया क़ुरआन मजीद की एक 'इस्तिलाह' (परिभाषा) है जो अपने अन्दर बहुत सारे मानी रखती है। तज़किए का ताल्लुक़ इनसान की पूरी ज़िन्दगी से है। इसमें रूह को पाक रखने के मानी भी पाए जाते हैं और उसे परवान चढ़ाने और बुलन्द करने के मानी भी।

इस दौर के मशहूर आलिमे-दीन मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी साहब ने इस छोटी-सी किताब में तज़किये की शक़्लें क़ुरआन मजीद की रौशनी में बयान की हैं। इनको पढ़कर इनसान के लिए यह आसान हो जाता है कि वह दुनिया और आख़िरत की कामियाबी के लिए तज़किये की सिफ़ात अपने अन्दर पैदा करे।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि.) हिन्दी ज़बान में इस्लामी किताबें तैयार करने के मुबारक काम में लगा हुआ है। "तज़किया क़ुरआन की नज़र में" नामक यह किताब हिन्दी में पेश करके हमें बेहद खुशी हो रही है जिस पर हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

अल्लाह से हमारी दुआ है कि वह इस किताब को लोगों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मुफ़ीद बनाए और इस किताब के लेखक और प्रकाशक सभी को इसका अच्छा बदला दे!

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

अध्यक्ष

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि.)

दिल्ली

1-12-2008

‘बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम’

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।

## तज़किया कुरआन की नज़र में

### तज़किया कुरआन की एक परिभाषा है

तज़किया कुरआन मजीद की एक परिभाषा है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) जिन मक़ासिद के लिए नबी बनाकर भेजे गए थे यह उनमें से एक अहम और बुनियादी मक़सद है। हज़रत इबराहीम (अलैहि.) ने ख़ाना काबा की तामीर के वक़्त दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! मुझे और मेरे बेटे इसमाईल को मुस्लिम और अपना फ़रमाँबरदार बनाए रख और हमारी औलाद से ऐसी उम्मत उठा जो तेरी फ़रमाँबरदार हो। आगे दुआ इस तरह है -

“ऐ हमारे रब ! उन लोगों में खुद उन्हीं में से एक रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए। उनको किताब और हिक़मत की तालीम दे और उनका तज़किया करे। तू बड़ा ज़बरदस्त और हिक़मतवाला है।”

(कुरआन, 2:129)

यह सूरा-2, बक्रा की आयत है। इसी सूरा में आगे चलकर फ़रमाया है -

“जिस तरह हमने तुम्हारे बीच एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हें निखारता है, और तुम्हें किताब और हिक़मत की तालीम देता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है जो तुम जानते न थे।”

(कुरआन, 2:151)

इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलैहि.) की दुआ क़बूल फ़रमाई और जिस मक़सद के लिए दुआ की गई थी उसको पूरा करने के लिए अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल.) को भेजा गया।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को पैग़म्बर बनाकर भेजे जाने का मक़सद कुरआन मजीद की सूरा-3, आले-इमरान, आयत-164; सूरा-62, जुमुआ, आयत-2 में भी बयान हुआ है।

## मानी और मतलब

तज़किया शब्द 'ज़का' शब्द से बना है। ज़का के मानी हैं - बढ़ना, विकसित होना, भलाई और तक्रवा (ईशपरायणता) का पाया जाना, इबादत और पवित्रता का हासिल होना। इसमें अपनी तारीफ़ और अपने भले काम को ज़ाहिर करने के मानी भी पाए जाते हैं। इन सभी मानी में कुरआन और हदीस में इसका इस्तेमाल हुआ है।

इस पहलू से तज़किया यह है कि आदमी की सोच और कर्म सम्बन्धी कमज़ोरियाँ जो उसे पस्ती और पतन की ओर ले जाती हैं दूर हों और उसके अन्दर सही सोच, नैतिकता और ईशपरायणता (तक्रवा) के गुण पैदा हों। इन्हीं गुणों से उसके व्यक्तित्व का विकास हो सकता है और वह बुलन्द स्थान प्राप्त कर सकता है। कुरआन मजीद में है -

“बेशक सफल हो गया वह जिसने मन को विकसित किया और असफल हुआ वह जिसने उसे दबा दिया।” (कुरआन, 91:9,10)

कुरआन मजीद की इस आयत में अरबी शब्द 'तज़किया' के मुक़ाबले में 'तदसिया' शब्द आया है। तज़किया में विकसित होने और उभरने का भाव है। इसके विपरीत तदसिया यह है कि किसी चीज़ को उभरने न दिया जाए और उसे दबा दिया जाए। इस्लामी विद्वान ज़मख़शरी कहते हैं -

“तज़किया के मानी हैं तक्रवा (ईशपरायणता) के द्वारा व्यक्तित्व को निखारना और बुलन्द करना। (इसके विपरीत) दुराचार और बुरे

कामों के द्वारा व्यक्तित्व में खराबी पैदा करने और उसे छिपा देने का नाम तदसिया है।”

(जमखशरी, अल-कशशाफ अंन हक्राइकि गवामिजित्तंजील : 4/748)

इसका मतलब यह है कि आदमी का अपने व्यक्तित्व को भलाई और ईशपरायणता (तक़वा) के द्वारा ऊपर उठाना तज़किया है। तदसिया यह है कि आदमी गुमराही और नैतिक गिरावट में पड़ा रहे और अपने व्यक्तित्व को उभरने न दे।

## तज़किये के समानार्थी शब्द

तज़किया के अर्थ में ‘ततहीर’ (पवित्रता) का शब्द भी आया है। हज़रत मरयम (अलैहि.) के बारे में कहा गया –

“अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे पवित्रता प्रदान की और तुझे तमाम दुनिया की औरतों पर प्राथमिकता देकर अपनी सेवा के लिए चुन लिया।”

(कुरआन, 3:42)

कुरआन मजीद की उपर्युक्त आयत में ‘तहह-र-कि’ आया है जिसका मतलब है ततहीर (पवित्रता प्रदान करना)। इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने हज़रत मरयम को तमाम नैतिक दोषों से पाक किया। उनके अन्दर नेकी तक़वा और इफ़्त और इस्मत जैसी खूबियाँ पैदा कीं। इसी को तज़किया कहते हैं।

नबी (सल्ल.) की पाक बीवियों के बारे में कहा –

“अल्लाह तो यह चाहता है कि तुम नबी के घरवालों से गन्दगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे।”

(कुरआन, 33:33)

आयत में अरबी शब्द ‘रिज्स’ आया है। इसका इस्तेमाल गन्दगी, मैल-कुचैल, गन्दी हरकत, हराम और कुफ़्र जैसी फ़िक्री और अमली खराबियों के लिए होता है। यहाँ रिज्स से मुराद दीनी और अखलाकी कमज़ोरियाँ हैं। आयत का मतलब यह है कि अल्लाह नबी (सल्ल.) की पाक बीवियों को हर प्रकार की



दीनी और अखलाक़ी कमज़ोरियों से पूरी तरह पाक करना चाहता है। इसके लिए अरबी शब्द 'ततहीर' आया है। तज़किया इसी का नाम है।

वुजू और तयम्मूम के अहकाम के तहत कहा गया -

“अल्लाह तुमपर ज़िन्दगी को तंग नहीं करना चाहता, बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी कर दे, शायद कि तुम शुक्रगुज़ार बनो।”  
(कुरआन, 5:6)

वुजू और तयम्मूम के ज़रीए आदमी को जिसमानी पाकी हासिल होती है और वह नमाज़ और कुरआन की तिलावत जैसी इबादतों के अदा करने के काबिल होता है। इसी तरह वह गुनाहों से भी पाक होता है। यहाँ 'ततहीर' के ज़रीए इन दोनों ही बातों की ओर इशारा है। यही तज़किया है।

कुरआन मज़ीद में एक जगह ततहीर और तज़किया के शब्द एक साथ समानार्थी रूप में आए हैं। (कुरआन, 9:103)

तज़किया के लिए तरबियत की परिभाषा भी इस्तेमाल होती है। तरबियत का मतलब है -

“किसी चीज़ को एक हालत से दूसरी हालत में इस तरह पहुँचाना कि वह पूर्णता की सीमा को पहुंच जाए।”

(मुफ़रदातुल-कुरआन, राशिब असफ़हानी)

अल्लाह की हस्ती को इसी अर्थ में 'रब' कहा जाता है कि वह जिस मखलूक (सृष्टि) के जिस जीवन-चरण में जो ज़रूरत है वह पूरी करता है और उसे पूर्णता के दर्जे तक पहुंचाता है। तज़किया की प्रक्रिया भी इसी तरह होती है। तरबियत ही से मुरब्बी (तरबियत करनेवाला) का शब्द निकला है। मुरब्बी उस व्यक्ति को कहा जाता है जो अपने मातहत व्यक्ति या व्यक्तियों की निगरानी करता है और उसमें जो कमज़ोरी या ख़राबी पाई जाए उसकी इस्लाह करता है।

तज़किया खुदापरस्ताना ज़िन्दगी गुज़ारने का नाम है, इसलिए उसे 'तक्रवा' (ईशपरायणता) भी कहा गया है। अतः कुरआन में कहा गया है -

“और उसे आग से दूर रखा जाएगा जो बड़ा ही परहेज़गार है, जो पाक होने के लिए अपना माल देता है।” (कुरआन, 92:17,18)

यही बात सूरा नज्म-53; आयत 32 में भी कही गई है।

## दीन में तज़किये की अहमियत

हज़रत इबराहीम (अलैहि.) ने अपनी और हज़रत इसमाईल (अलैहि.) की औलाद में एक पैग़म्बर के भेजने की अल्लाह से जो दुआ की थी उसके उद्देश्यों में आयतों का पढ़ना, किताब की तालीम और हिक्मत और तज़किया का ज़िक्र है। (कुरआन, 2:129) यह हक़ीक़त में इस बात की ओर इशारा है कि आयतों की तिलावत और किताब और हिक्मत की तालीम का अस्ल मक़सद इल्मी (बौद्धिक) और अमली तज़किया है। हज़रत इबराहीम (अलैहि.) की दुआ के नतीजे में अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल.) को पैग़म्बर बनाए जाने का जहाँ उल्लेख है वहाँ आयतों की तिलावत के फ़ौरन बाद तज़किये का उल्लेख है। (कुरआन, 2:151) इसलिए कि अस्ल मक़सद तज़किया ही है। किताब और हिक्मत की तालीम इसी के लिए है। क़ाज़ी बैज़ावी कहते -

“अस्ल मक़सद तज़किया है इसलिए इसे यहाँ पहले बयान किया गया है। हज़रत इबराहीम की दुआ में इसका उल्लेख आख़िर में हुआ है। इसलिए कि यह नतीजे के तौर पर आख़िर ही में हासिल होता है।”

इससे दो बातें उभर कर सामने आती हैं -

एक यह कि तज़किये की बुनियाद आयतों की तिलावत, किताब व हिक्मत की तालीम पर होनी चाहिए। इसके बिना हक़ीक़ी तज़किया हासिल नहीं हो सकता। इस राह से हटकर किसी दूसरे तरीक़े से जो तज़किया हो उसका इस्लाम की निगाह में कोई एतिबार नहीं होगा।

दूसरी बात यह है कि अगर आयतों की तिलावत हो, अल्लाह की किताब की तालीम हो और उसके रहस्यों, शिक्षाओं और हिक्मतों (तत्त्व-ज्ञान) का बयान भी हो और तज़किया न हो तो उनका अस्ल मक़सद पूरा न होगा। वह एक ऐसी भाग-दौड़ होगी जिसमें निशाने-राह (पथ-रेखाओं) को मंज़िल समझ लिया जाए।

## तज़किये का व्यापक तसव्वुर

तज़किया और उससे बने दूसरे शब्दों का इस्तेमाल कुरआन मजीद में मुस्तलिफ़ जगहों पर हुआ है। उन सब पर एक नज़र डालने से यह हकीकत सामने आती है कि तज़किये का मतलब ज़िन्दगी के किसी एक विभाग का सुधार और उसका कमियों से पाक होना और उसमें खूबियों का पाया जाना नहीं है, बल्कि पूरी ज़िन्दगी का तज़किया है। अगर किसी आदमी की इबादतों का तज़किया हो जाए मगर उसका सुलूक अपने घर और खानदानवालों के साथ अच्छा न हो तो यह उस आदमी का नाक़िस और अधूरा तज़किया होगा। इसी तरह किसी आदमी के अखलाक़ तो अच्छे हो जाएँ मगर उसके मामलात खराब हों तो यह भी तज़किये की कमी होगी। कुरआन की तालीमात के मुताबिक़ तज़किया एक व्यापक कार्य है जो ज़िन्दगी के हर पहलू से ताल्लुक़ रखता है। यह हकीकत में व्यक्तिगत और सामूहिक हर पहलू से सुधार और तरबियत का नाम है।

## अक़ीदे का तज़किया

तज़किये का सबसे पहला मरहला अक़ीदे और फ़िक़्र का सुधार है। अल्लाह के पैग़म्बर इसी से तज़किये का आगाज़ करते हैं। कुरआन मजीद की शुरू में उतरनेवाली सूरतों में एक सूरा अल-आला भी है। इसमें अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को ज़िक़्र और नसीहत का हुक़म दिया गया और कहा गया कि जिसके अन्दर इससे डर और विनम्रता (खुशूअ) पैदा होगी वह फ़ायदा उठाएगा और जो कोई बद-क़िस्मत है इससे दूर ही रहेगा और जहन्नम की आग का हक़दार होगा। (कुरआन, 87:9-13)

इसके बाद फ़रमाया -

“कामयाब हो गया वह जिसने तज़किया इख्तियार किया।”

(कुरआन, 87:14)

मक्का के इब्तिदाई दौर में तज़किये के अन्दर बुनियादी तौर से यह बात दाख़िल थी कि आदमी शिर्क और बुतपरस्ती को पूरे तौर पर छोड़ दे, ख़ालिस तौहीद का अक्कीदा उसके दिल और दिमाग़ में रच-बस जाए और वह बुराई को छोड़कर अल्लाह की किताब और उसके पैग़म्बर की फ़रमाँबरदारी का रास्ता अपना ले। हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-अब्बास (रज़ि.) इसके मानी बयान करते हैं- यानी कामयाब हुआ वह जिसने शिर्क से पाकी इख्तियार की।

इमाम इब्ने-जरीर तबरी (रह.) ने कुरआन की इस आयत का मतलब यह बयान किया है -

“बेशक वह कामयाब हुआ और उसने अपनी मुराद को पा लिया जिसने कुफ़्र और अल्लाह की नाफ़रमानियों से पाकी हासिल की, अल्लाह ने जिन बातों का हुक़्म दिया है उनपर अमल किया और उसके निश्चित किए हुए फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारियों को अदा किया।”

(जामिउल-बयान फ़ी तफ़सीरिल-कुरआन, भाग-30, पृ 99)

इस सिलसिले में एक हदीस हाफ़िज़ अबू-बक्र बज़ज़ार ने भी बयान की है। हज़रत जाबिर इब्ने-अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने कुरआन मज़ीद की आयत “कामयाब हो गया वह जिसने तज़किया इख्तियार किया” का मतलब बयान करते हुए फ़रमाया -

“जिसने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं; जिन चीज़ों को उसके बराबर ठहराया जाता है उनसे दूर रहा और इस बात की गवाही दी कि मैं उसका रसूल हूँ।”

(इब्ने-कसीर, तफ़सीरुल-कुरआनिल-अज़ीम, 4/501;

कुरतबी, अल-जामिउ लि-अहकामिल-कुरआन, जिल्द-10, भाग 20, पृ 16)

जलालैन में ऊपर बयान की गई आयत का यह मतलब बयान किया गया है कि -

“कामयाब वह हुआ जिसने ईमान के ज़रीए पाकी हासिल की।”

(तफ़सीर जलालैन : तफ़सीर सूरा अल-आला)

कुरतबी में है -

“यानी वह जो ईमान के ज़रीए शिर्क से पाक हुआ।”

(कुरतबी, अल-जामिउ लि-अहकामिल-कुरआन, जिल्द 10)

मक्का के इब्तिदाई दौर में जो सूरतें उतरीं उनमें सूरा अश-शम्स भी है, उसमें भी यह बात बयान की गई है -

“बेशक कामयाब हो गया वह जिसने नफ़्स का तज़किया किया और नामुराद हुआ वह जिसने उसको दबा दिया।”

(कुरआन, 91:9,10)

मतलब यह कि वह शख्स कामयाब और सफल हुआ जिसने नेकी और तक्रवा (परहेज़गारी) के ज़रीए अपनी शख्सियत को तरक्की दी और ऊंचे दर्जों तक पहुंच हासिल की। इसके विपरीत नाकाम हुआ वह जिसने ग़लत अक्कीदे, ग़लत विचार और बुरे कामों से अपने आप को उभरने न दिया और मिट्टी में मिलाकर रख दिया। अल्लामा शौकानी कहते हैं -

“जिसने तक्रवा (ईशपरायणता) के ज़रीए अपने नफ़्स का तज़किया किया, उसे विकसित किया और ऊपर उठाया उसने हर मतलूब चीज़ पा ली और पसन्दीदा चीज़ पाने में कामयाब रहा.....इसके बरखिलाफ़ वह शख्स घाटे में रहा जिसने उसे गुमराह किया, भटकाया और उसे बुझाया और अल्लाह की इताअत और नेक कामों के ज़रीए उसे उभरने और नुमायाँ होने न दिया।”

(मुहम्मद सुलैमान अब्दुल्लाह अल-अशकर, जुब्दतु-तफ़सीर मिन फ़तहिल क़दीर

[लिश-शौकानी] पृ 809)

ऊपर हमने कुरआन मजीद की मक्की सूरतों की कुछ आयतें बयान की हैं। इसके अलावा दूसरी मक्की सूरतों में भी विभिन्न तरीकों और सन्दर्भों से तज़किये का बयान है। उनमें अक्कीदे और फ़िक्र के तज़किये का पहलू नुमायाँ है। कुरआन मजीद की मदनी सूरतों में भी तज़किये की हिदायतें मौजूद हैं। उनमें से कुछ में अक्कीदे और फ़िक्र के सुधार का साफ़ उल्लेख पाया जाता है। कुरआन में है -

“वही है जिसने उम्मियों के अन्दर एक रसूल ख़ुद उन्हीं में से उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है। उनका तज़किया करता है और उनको किताब और हिकमत की तालीम देता है, हालाँकि इससे पहले वे लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे।” (कुरआन, 62:2)

कुरआन मजीद की इस आयत में अल्लाह के उन बड़े एहसानों का ज़िक्र है जो उसने अपने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के ज़रीए एक उम्मी क़ौम पर किए। ये एहसान वक्त़ी नहीं, दाइमी थे।

उम्मी उस शख्स को कहा जाता है जो लिखना-पढ़ना न जानता हो। इमाम राग़िब (रह.) कहते हैं -

“उम्मी वह है जो न लिख सके और न कोई किताब पढ़ सके।”

(राग़िब असफ़हानी, मुफ़रदातुल-कुरआन)

इसमें ग़फ़लत और जहालत का तसव्वुर भी है।

उम्मी यहाँ अरबवालों को कहा गया है। उनके जाहिलीयत के दौर की हालत बयान हुई है कि वे खुली गुमराही में गिरफ़्तार थे। इससे अस्ल में मुराद शिर्क और सत्य-धर्म से बेख़बरी और गुनाहों और बुराइयों की जिन्दगी है। अक्कीदे और अमल की इस गुमराही से निकलना तज़किया है। ज़मख़शरी ने “उनका तज़किया करता है” का मतलब इस तरह बयान किया है -

“नबी (सल्ल.) उन्हें शिर्क से और जाहिलियत की बुराइयों से पाक करते हैं।”

(ज़मख़शरी अल-कशशाफ़, अन हक्काइकि गावामिज़ित-तन्ज़ील, 4/517)

काजी शौकानी कहते हैं -

“नबी (सल्ल.) उनका तजकिया करते हैं यानी उन्हें कुफ्र व गुनाहों के मैल-कुचैल और बुरे अखलाक़ से पाक करते हैं। इसके ये मानी भी बयान हुए हैं कि नबी (सल्ल.) उनको ईमान के ज़रीए पाक दिल बनाते हैं।”

कुरआन मजीद की सूरा आले-इमरान में यही बात ईमानवालों पर अल्लाह के एहसान की हैसियत से बयान हुई है -

“हकीकत में ईमानवालों पर तो अल्लाह ने यह बहुत बड़ा एहसान किया है कि उनके बीच खुद उन्हीं में से एक ऐसा पैग़म्बर उठाया जो उसकी आयतें उन्हें सुनाता है, उनका तजकिया करता है, उनको किताब और हिक्मत की तालीम देता है, हालाँकि इससे पहले यही लोग गुमराही में पड़े हुए थे।” (कुरआन, 3:164)

यानी ईमानवालों पर यह अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने अपने पैग़म्बर के ज़रीए उन्हें उस खुली गुमराही से निकाला जिसमें वे पड़े हुए थे। यह गुमराही फ़िक्र (विचार) व अक़ीदे और अखलाक़ व किरदार हर तरह की थी। तजकिया इसी से निकालने का नाम है। ज़मख़शरी ने इसका मतलब इस तरह ब्यान किया है -

“कुफ्र की वजह से दिलों में जो गन्दगी पैदा हो जाती है उससे नबी (सल्ल.) उन्हें पाक करते हैं। (इसी तरह) हराम चीज़ों और बुराइयों में पड़े होने की वजह से अंगों को जो गन्दगी लग जाती है उसे दूर करते हैं।” (ज़मख़शरी, अल-क़शाफ़ 1/427)

यही बात काजी बैज़ावी ने मुख्तसर लफ़्ज़ों में कही है -

“नबी (सल्ल.) उन्हें तबियतों और स्वभाव की गन्दगी और बुरे अक़ीदों और बुरे कामों से पाक करते हैं।”

(बैज़ावी अनवारुत-तनज़ील व असरारुत-तावील, 1/188)

## इबादतों का तज़किया

तज़किया इबादतों का भी होता है और इबादतों से तज़किया हासिल भी होता है। कुरआन में है —

“कामयाब हो गया वह जिसने तज़किया इखतियार किया और अपने रब का नाम याद किया फिर नमाज़ पढ़ी।”

(कुरआन, 87:14,15)

इन आयतों में तज़किये को कामयाबी का ज़रीआ करार देने के साथ इसकी एक अमली सूत्र भी बयान कर दी गई है। वह यह कि आदमी अल्लाह का जिक्र करे और उसका नाम लेता रहे। इसकी बेहतरीन सूत्र वे दुआएं हैं जिनको अल्लाह के रसूल (सल्ल.) रात-दिन और हर मौक़े पर पाबन्दी से पढ़ते थे और जो सहीह हदीसों से साबित है। अल्लाह का नाम लेने और उसे याद करने का सबसे ऊंचा और अच्छा ज़रीआ नमाज़ है। इसी वजह से रब को याद करने के फ़ौरन बाद नमाज़ का उल्लेख है। नमाज़ के बग़ैर तज़किये का तसव्वुर नहीं है। नमाज़ में सजदा है और सजदा अल्लाह से करीब होने का सबसे बड़ा ज़रीआ है। हुक़्म दिया गया कि “सज्दा करो और करीब हो जाओ।”

(कुरआन, 96:19)

ज़कात में तज़किये का अर्थ मौजूद है, इसलिए कि दोनों एक ही धातु (माददे) से बने हैं। ज़कात से माल पाक भी होता है और उसमें बरकत और बढ़ोत्तरी भी होती है।<sup>1</sup>

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) को हुक़्म है —

“आप उनके मालों में से सदका क़बूल करके उन्हें पाक करें और उनका तज़किया करें।”

(कुरआन, 9:103)

<sup>1</sup> देखें लेखक की पुस्तक ‘इनफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह’ (अल्लाह की राह में खर्च करना)



इसका एक मतलब यह भी है कि सदके अगर सही हाथों में पहुंचें तो उससे पाकी और तज़किया हासिल होता है।

रोज़े का मक़सद “ताकि तुम्हारे अन्दर तक्रवा पैदा हो” (कुरआन, 2:183) के शब्दों में बयान हुआ है। यानी इससे उम्मीद की जा सकती है कि आदमी गुनाहों से बचेगा और खुदापरस्ती के रास्ते पर चलेगा। तक्रवा का ही दूसरा नाम तज़किया है।

## अखलाक़ और किरदार का तज़किया

अल्लाह के रसूलों की जिम्मेदारियों में बेहतरीन अखलाक़ और अच्छे किरदार की तालीम देना भी शामिल रहा है। वे अच्छे और बेहतरीन अखलाक़ की तालीम ही नहीं देते बल्कि इनसान की ज़िन्दगी को पाकीज़ा भी बनाते हैं और बुलन्द भी। कुरआन मजीद ने इस बात पर उभारा है कि लोग अपने अन्दर अच्छे अखलाक़ पैदा करें और अखलाक़ की बुलन्दी को ईमानवालों की एक नुमायाँ खूबी और सिफ़त करार दी है। वह बुरे अखलाक़ और बदकिरदारी से उनके दामन को पाक देखना चाहता है। उसके नज़दीक अच्छे और बेहतरीन अखलाक़ का सरचश्मा (स्रोत) ईमान है। सही मानों में ईमान की दौलत नसीब हो तो ज़िन्दगी के हर गोशे में बुराइयों से पाक और बहुत ही अच्छा किरदार वुजूद में आता है। यह अस्ल में तज़किये का ही एक पहलू है। नज़रें झुकाकर और पाकदामनी अपनाकर इनसान ऊंचे किरदार का सुबूत देता है। यह अखलाक़ का तज़किया है। कुरआन ने ईमानवालों को हिदायत दी है —

“मोमिनों से कह दो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। इसमें उनके लिए ज़्यादा पाकीज़गी है। बेशक अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है जो कुछ वे किया करते हैं।”

(कुरआन, 24:30)

आँखों का भटकना बदकारी की शुरुआत है। इससे नाजायज़ ताल्लुकात की राहें खुलती हैं। इसी लिए नज़रें नीची रखने का या आँख बन्द रखने का

हुकम दिया गया है। कुरआन की इस बात पर अमल हो तो बदकारी से बचा जा सकता है। इसके बारे में फ़रमाया —

“यह उनके लिए ज़्यादा पाकीज़ा तरीका है।”

कुरआन में इसके लिए शब्द ‘अज़्का’ इस्तेमाल हुआ है। इसमें सफ़ाई और पाकी के मानी पाए जाते हैं।

## समाज का तज़किया

तज़किये के मानी में समाज का तज़किया भी शामिल है। कुरआन में एक जगह कहा गया है कि जो औरतें तलाक़ के बाद पिछले शौहरों से आपसी रज़ामन्दी से और दस्तूर के मुताबिक़ निकाह करना चाहें तो उन्हें इससे न रोको। अल्लाह और आखिरत पर ईमान रखनेवालों को इसकी नसीहत की जा रही है। इसके बाद फ़रमाया —

“यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और ज़्यादा साफ़-सुथरा तरीका है। अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।” (कुरआन, 2:232)

आयत में ‘अज़्का’ और ‘अतहर’ के शब्द इस्तेमाल हुए हैं। उनका जो माद्दा (धातु) है वही तज़किया और ततहीर का भी है। आयत का मतलब यह है कि तलाक़शुदा औरत को निकाह से न रोकना उसकी और समाज की पाकीज़गी का बेहतरीन ज़रीआ है। इससे अखलाक़ की हिफ़ाज़त होती है और भटकने के अन्देशे कम हो जाते हैं। यही तज़किया का मक़सद है।

सामाजिक आदाब और शिष्टाचार बयान करते हुए कुरआन मज़ीद में कहा गया है कि किसी के मकान में दाखिल होने से पहले उससे इजाज़त ले लो और सलाम करो। इसके बग़ैर उसमें दाखिल न हो जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उम्मीद है कि तुम नसीहत हासिल करोगें। अगर मकान में कोई मौजूद न हो तो भी बग़ैर इजाज़त के अन्दर न जाओ। इजाज़त मिलने पर ही जाओ। अगर तुम्हें वापस जाने के लिए कहा जाए तो वापस हो जाओ (इसे अपनी बेइज़्जती न समझो)।

इस हिदायत का मकसद वाज़ेह है। आदमी का घर उसके एकान्त की जगह है जहाँ वह किसी भी हाल में और अपने किसी भी काम में मशगूल हो सकता है। उसमें बिना इजाज़त दाखिल होने से बहुत सी बुराइयाँ पैदा हो सकती हैं। कम से कम बेपरदगी का माहौल तो पैदा होता ही है। इसी लिए इस हिदायत के बाद कहा गया —

“यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा है। अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो कुछ तुम करते हो।”  
(कुरआन, 24:28)

इस आयत में शब्द अज़ूका आया है जिसका मतलब होता है बेहतर तज़किया।

## ख़ुदा की राह में मज़बूती के साथ जमे रहना भी तज़किया है

हज़रत मूसा (अलैहि.) ने जब अपनी पैग़म्बरी के सुबूत में मोज़जे (चमत्कार) पेश किए तो फ़िरऔन ने उन्हें जादू के करतब करार दिया और हर तरफ़ से जादूगरों को जमा किया ताकि उसका मुक़ाबला करें। लेकिन जादूगर जैसे ही मैदान में आए उनपर यह हकीकत खुल गई कि हज़रत मूसा (अलैहि.) धोखा-धड़ी और जादूगरी का प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं बल्कि वे अल्लाह के पैग़म्बर हैं और जो मोज़जे पेश कर रहे हैं वे इनसान की ताक़त से बाहर हैं। इसी लिए वे जादूगर बिना किसी देरी और झिझक के ईमान ले आए और सजदे में गिर पड़े। इसपर फ़िरऔन ने उन्हें धमकी दी कि वे उनके हाथ पैर काटकर सूली पर चढ़ा देगा। इसके जवाब में जादूगरों ने बग़ैर किसी डर के और किसी ख़तरे की परवाह किए बग़ैर कहा कि जो कुछ तुम्हें करना है कर डालो; हम तो ईमान ले आए। दुआ है कि अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करे और तुम्हारी ज़ोर-ज़बरदस्ती की वजह से हमने हज़रत मूसा (अलैहि.) के मुक़ाबले में आने की जो ग़लती की है उसे भी माफ़ कर दे।  
(कुरआन, 20:55-73)

इसके बाद कहा गया —

“बेशक जो कोई अपने ख के पास मुजरिम की हैसियत से आएगा उसके लिए जहन्नम है जिसमें न वह मरेगा और न जाएगा। और जो कोई उसके पास ईमान लेकर आएगा, जिसने अच्छे अमल किए होंगे, तो ऐसे सब लोगों के लिए तो ऊँचे दर्जे में होंगे। रहने के लिए बाग हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह बदला है उसका जिसने तजकिया हासिल किया (पाक हुआ)।”

(कुरआन, 20:74-76)

इन आयतों के बारे में एक राय यह भी है कि ये जादूगारों ही के बयान का हिस्सा हैं। दूसरी राय यह है कि यह अलग से बात कही गई है।

(बैजावी, अनवारुत-तनज़ील 2/53)

इनमें जो राय भी इखतियार की जाए बहरहाल उसका ताल्लुक ऊपर की बात ही से है। इन आयतों में दो उसूली बातें बयान हुई हैं -

एक यह कि जिसने कुफ़्र और बद-अमली की राह अपनाई और जो मुजरिम और खताकार है वह आखिरत में अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता। वह बहुत ही बुरे और कभी न खत्म होनेवाले अज़ाब में गिरफ़्तार होगा। मौत और जिन्दगी की कशमकश से हमेशा दोचार रहेगा। इससे फिरौन का किरदार और उसका अंजाम सामने आता है।

दूसरी बात यह कही गई है कि जो आदमी अपने दामन में ईमान और नेक अमल की दौलत लिए हुए अल्लाह के दरबार में पहुंचेगा वह जन्नत के ऊँचे दर्जों का हक़दार होगा। यह बात जादूगारों के किरदार को सामने रखकर कही गई है। हक़ के वाज़ेह होने के बाद उन्होंने जिस तरह आगे बढ़कर उसे क़बूल किया, उसके लिए हिम्मत, हौसले और मज़बूती से जमे रहने का सुबूत दिया और जान की बाज़ी लगाने के लिए बेखौफ़ किसी खतरे की परवाह किए बग़ैर तैयार हो गए, यह उसी के अंजाम का उल्लेख है। बात इसपर खत्म हुई है -

“यह बदला है उस शख्स का जिसने तजकिया हासिल किया।”

यह इस बात का बयान है कि जन्नत में ऊंचे दर्जे तज़किया ही से हासिल होते हैं। इमाम राज़ी कहते हैं -

“इस आयत से पता चलता है कि ऊंचे दर्जे तज़किया हासिल करनेवाले का बदला है; यानी उसका बदला है जो बुराइयों से पाक हो गया है।”  
(तफ़सीर-कबीर)

हाफ़िज़ इब्ने-कसीर इस वाक्य का मतलब बयान करते हुए कहते हैं -

“यह बदला है उस शख्स का जिसने अपने नफ़्स (मन) को गन्दगी, बुराइयों, शिर्क से पाक किया, अल्लाह की इबादत की, जो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, अल्लाह के रसूलों की तालीमात की पैरवी की जिनमें भलाई ही भलाई और कामयाबी ही कामयाबी है।”  
(तफ़सीर इब्ने-कसीर; 3/104)

जादूगरों का हक़ को क़बूल करना, उनका हक़ पर जमे रहना और हज़रत मूसा (अलैहि.) की पैरवी इस बात का सुबूत था कि उनको तज़किये का यह ऊंचा दर्जा हासिल था।

## सियासत (राजनीति) का तज़किया

ज़िन्दगी के दूसरे विभागों की तरह सियासत का भी तज़किया होता है। अल्लाह के रसूल इस पहलू से भी तज़किया करने की ज़िम्मेदारी पूरी करते हैं। फ़िरऔन खुद को खुदा और हुकूमत का मालिक समझता था। वह अपने दरबारियों से कहता है -

“ऐ दरबारवालो! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी खुदा को नहीं जानता।”  
(क़ुरआन, 28:38)

मतलब यह कि मैं तुम्हारा खुदा हूँ। यहाँ सिर्फ़ मेरा हुक़म चलेगा, इसलिए तुम किसी दूसरे को खुदा नहीं करार दे सकते। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने उसे एक खुदा की इबादत की दावत दी तो वह गुस्से में आ गया और बोला -

“अगर तूने मेरे सिवा किसी दूसरे को खुदा बनाया (हाकिम ठहराया) तो बेशक मैं तुझे कैद कर दूँगा, कैदियों के साथ डाल दूँगा।”  
(कुरआन, 26:29)

एक दूसरे मौके पर उसका दावा इस तरह बयान हुआ है

“मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ।”  
(कुरआन, 79:24)

इन हालात में अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहि.) को हुकम दिया

“फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक वह सरकश हो गया है। और उससे कहो कि क्या तू इसके लिए तैयार है कि तेरा तज़किया हो (और तू संवर जाए) और मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ की उसका तुझे डर हो?”  
(कुरआन, 79:17-19)

यह अस्ल में इस बात की दावत थी कि खुदा सिर्फ़ एक है और किसी दूसरे को खुदाई का दावा करने का हक़ नहीं है। इसलिए फ़िरऔन को अपनी बेलगाम और बेक़ैद हाकिमियत को छोड़कर खुदा की हिदायत और उसके क़ानून पर अमल करना चाहिए। इसमें एक तरफ़ फ़िरऔन के सबसे बड़ा रब होने को ग़लत ठहराया गया था और दूसरी तरफ़ उसे खुदा की हिदायत क़बूल करने और खुदा की इबादत और फ़रमांबरदारी की दावत थी। इसी को तज़किया कहा गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने-अब्बास (रज़ि.) ऊपर की आयत में आए शब्द तज़किया का मतलब बयान करते हैं कि क्या तुम इसके लिए तैयार हो कि ला-इला-ह इल्लल्लाह (खुदा के अलावा कोई बन्दगी के लाइक़ नहीं) की गवाही दो। यही बात इकारिमा ने कही है। इब्ने-ज़ैद कहते हैं कि इससे इस्लाम (खुदा के आगे सुपुर्दगी) मुराद है।

(इब्ने-जरीर, तफ़सीर कुर्तबी अल-जामिउ लि-अहकामिल-कुरआन)

कुरआन के एक मशहूर आलिम ख़ाज़िन इसका मतलब बयान करते हुए कहते हैं

“क्या तुम इसके लिए आमादा हो कि शिर्क और कुफ्र से पाक हो जाओ।”

इसका यह मतलब भी बयान हुआ है कि तुम खुदा के दीन को क़बूल कर लो और अपने अमल का सुधार कर लो।

वे आगे कहते हैं कि -

“यहाँ ख़ास तौर पर फ़िरऔन का ज़िक्र है। हालाँकि हज़रत मूसा (अलैहि.) की दावत फ़िरऔन की पूरी क़ौम के लिए थी। इसकी वजह यह है कि फ़िरऔन उनका नुमायाँ आदमी था। उसे दावत देना उसकी क़ौम को दावत देने के बराबर था।”

(खाज़िन लुबाबुत-तज़ील मअ तफ़सीरिल-बावी)

यह है वह तज़किया जिसका मुतालबा हज़रत मूसा (अलैहि.) ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम से किया था।

## तज़किया ख़ानदानी विरासत नहीं है

क़ुरआन मजीद ने वाज़ेह किया है कि तज़किया (पाकी) ख़ानदानी विरासत नहीं है जो लोगों में एक के बाद दूसरे को मुंतक़िल होती चली जाए, बल्कि इसका ताल्लुक़ इनसानों की सोच और अमल से है। इसके लिए उसे कोशिश और मेहनत करनी होगी। यहूदियों का खयाल था कि वे हज़रत इबराहीम (अलैहि.) के बेटे हज़रत इसहाक़ (अलैहि.) की नस्ल से हैं और दुनिया की क़ौमों में सबसे ऊँचे हैं। वे कुछ भी करें उनके सारे गुनाह माफ़ हो जाएंगे। अपने बुरे कामों की वजह से वे जहन्नम के हक़दार ठहरे भी तो कुछ ही दिनों में पाक-साफ़ होकर जन्नत में पहुंच जाएंगे। इसी तरह ईसाइयों ने हज़रत ईसा (अलैहि.) को अल्लाह का बेटा करार दे रखा था। वे समझते थे कि हज़रत ईसा (अलैहि.) पर ईमान लाना नजात (मुक्ति) के लिए काफ़ी है।

“यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं।”

(क़ुरआन, 5:18)

कुरआन मजीद ने इस ग़लत खयाल का जगह-जगह खण्डन किया है।  
एक जगह कहा —

“क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने आप को पाकीज़ा कहते हैं ? (कोई यूँ ही पाकीज़ा नहीं हुआ करता) बल्कि अल्लाह ही जिसका चाहता है तज़किया करता है। और उनके साथ ज़रा भी जुल्म नहीं किया जाता।”  
(कुरआन, 4:49)

### तज़किये की तलब ज़रूरी है

कुरआन मजीद की सूरा-80, अ-ब-स की शुरू की आयतों से वाज़ेह होता है कि तज़किये के लिए तलब और इच्छा का पाया जाना ज़रूरी है। इन आयतों के तहत कुरआन की तफ़सीर की किताबों में जो वाक़िआ बयान हुआ है उससे इन आयतों के समझने में मदद मिलती है। अल्लामा कुरतबी इसके बारे में लिखते हैं कि इस वाक़िआ को कुरआन के सभी आलिमों ने बयान किया है। फिर उसकी तफ़सीर बयान की है। (तफ़सीर कुरतबी, भाग-10, पृष्ठ 138)

इस वाक़िआ की तफ़सीर यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल.) कुरैश के सरदारों के साथ बात-चीत कर रहे थे और उनके सामने इस्लाम की दावत पेश कर रहे थे। इसी बीच हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने-उम्मे-मक्तूम (रज़ि.) पहुंच गए। वे इस्लाम क़बूल कर चुके थे। उस वक़्त उनका मक़सद अपने सुधार और तरबियत के लिए हिदायतें हासिल करना था। इसलिए वे पहुंचते ही इसकी दरखास्त करने लगे। वे नाबीना (अन्धे) थे इसलिए उन्हें अंदाज़ा न हो सका कि नबी (सल्ल.) इस वक़्त कुरैश के सरदारों से अहम दावती गुफ़्तगू करने में लगे हुए हैं। नबी (सल्ल.) को इस तरह उनका बीच में आ जाना नापसन्द हुआ। इसपर ये आयतें उतरीं —

“उसने त्योंरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया, इस बात पर कि उसके पास अन्धा आ गया। तुम्हें क्या मालूम, शायद वह सुधर जाए या नसीहत पर ध्यान दे और नसीहत करना उसके लिए फ़ायदेमन्द हो ? जो शख्स बेपरवाही करता है, उसकी तरफ़ तो तुम तवज्जोह करते हो



— हालाँकि अगर वह न सुधरे तो तुमपर उसकी कब जिम्मेदारी है। जो खुद तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और डर रहा है, उससे तुम बेरुखी बरतते हो।”

(कुरआन, 80:1-10)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने-उम्मे-मकतूम (रज़ि.) के अन्दर दीन का इल्म हासिल करने और अपनी इस्लाह की तलब थी। वे तज़किया हासिल करना चाहते थे, इसलिए दौड़े हुए आए। फ़रमाया गया कि उनसे बेरुखी सही नहीं है। यही तलब और इच्छा आदमी को तज़किये की राह में आगे बढ़ाती है और अल्लाह तआला भी मदद फ़रमाता है। उसका दस्तूर है —

“जो उसकी तरफ़ रुजूअ करता हो उसे वह राह दिखाता है।”

(कुरआन, 42:13)

इन आयतों में मुज़क्की यानी तज़किया करनेवाले की यह जिम्मेदारी बताई गई है कि जिस आदमी में तज़किये की चाहत देखे उसकी तरफ़ खास तवज्जोह दे। इसके मुक्राबले में उन लोगों को अहमियत न दे जिनके अन्दर लापरवाही और बेनियाज़ी हो और जो किसी हिदायत और रहनुमाई से खुद को बेनियाज़ समझते हैं। और वे हिदायत क़बूल न करें और ईमान की दौलत से महरूम रहना ही पसन्द करें तो फ़रमाया गया कि उसमें आपका कोई कुसूर नहीं है। आपकी जिम्मेदारी दावत देने और पैग़ाम पहुंचाने की है। इसके बाद वे जो रवैया इखतियार करें उसके जिम्मेदार वे खुद हैं, आप नहीं हैं।

यहाँ तज़किये से मुराद अल्लाह पर ईमान लाना और उसकी हिदायत क़बूल करना है। बग़ावी कहते हैं कि “और वह न सुधरे तो तुमपर उसकी कब जिम्मेदारी है” का मतलब यह है कि वह ईमान न लाए और हिदायत क़बूल न करे। तुम्हारे ऊपर तो सिर्फ़ पहुंचा देना है। यही बात ख़ाज़िन ने कही है।

(तफ़सीरुल-खाज़िन मअ तफ़सीरिल-बग़ावी 6/366

तथा देखें बुनाबी तफ़सीर, जिल्द-10, पेज-140)

## शैतान की इताअत से बचा जाए

तजकिये के लिए जरूरी है कि अल्लाह तआला की तरफ आदमी रुजूअ करे। शैतान के धोखे और फरेब से भरी हुई चालों को समझे और उनसे दूर रहे। किसी मामले में उसके पीछे न चले। शैतान की पैरवी आदमी को तजकिये से महरूम कर देती है। तजकिया दुनिया का सामान नहीं है कि हर आदमी को हासिल हो जाए। बल्कि यह तो सिर्फ अल्लाह तआला की खास मेहरबानी है जो इनसान को मिलती है। यह बात कुरआन मजीद की सूरा-24, नूर में उस झूठे वाकिए की मुनासिबत से बयान हुई है जो हजरत आइशा (रजि.) के बारे में फैला दिया गया था। उसमें उन लोगों के लिए याददिहानी और चेतावनी भी है जो उसमें लिप्त थे। कहा गया है -

“ऐ ईमान लानेवालो! शैतान के नक्रशे-क़दम पर मत चलो। उसकी पैरवी कोई करेगा तो उसे गन्दे कामों और बुराई का ही हुकम देगा। अगर अल्लाह की मेहरबानी और उसका रहम तुमपर न होता तो तुममें से कोई शख्स कभी पाक नहीं हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। अल्लाह सुननेवाला और जाननेवाला है।”

(कुरआन, 24:21)

हाफ़िज़ इब्ने-कसीर (रह.) इस आयत के आखिरी हिस्से का मतलब बयान करते हुए कहते हैं -

“अल्लाह तआला जिसे चाहता है गुनाहों से तौबा और रुजूअ की इनसानी दिलों को शिर्क से, गुनाह और नाफ़रमानी से, उनके अन्दर पाई जानेवाली गन्दगी से और अखलाक़ की पस्ती से पाक होने की हालत के मुताबिक़ तौफ़ीक़ देता है। उसकी तौफ़ीक़ न हो तो कोई भी आदमी खुद से अपने अन्दर तजकिया और भलाई पैदा नहीं कर सकता।”

(इब्ने-कसीर, तफ़सीरुल-कुरआनिल-अज़ीम 3/275)

यही ज़ब्बा तजकिये की बुनियाद है। इसी से आगे की राहें खुलती हैं।

## तज़किये पर घमंड न हो

अगर किसी को खुशकिस्मती से नेकी और परहेज़गारी की तौफ़ीक़ हासिल है तो उसके अन्दर इसपर शुक्र का जज़्बा पैदा होना चाहिए। यह न हो कि ऐसा शख्स खुद को बरतर और दूसरों को कमतर समझने लगे और अपनी तारीफ़ खुद करने की बीमारी में गिरफ़्तार हो जाए। क़ुरआन में कहा गया है -

“वे लोग जो बड़े-बड़े गुनाहों और खुले-खुले बुरे कामों से बचते हैं, यह और बात है कि कोई छोटी बुराई उनसे हो जाए। बेशक तुम्हारे रब की मग़फ़िरत का दामन बहुत कुशादा है। वह तुम्हें उस वक़्त से ख़ूब जानता है जब उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में अभी भ्रूण-अवस्था में थे। तो अपने नफ़्स की पाकी के दावे न करो। वही बेहतर जानता है कि वाक़ई परहेज़गार कौन है।”  
(क़ुरआन, 53:32)

आयत का मतलब यह है कि अगर आदमी बड़े-बड़े गुनाहों से बचे तो अल्लाह तआला छोटी-छोटी ग़लतियों को माफ़ कर देता है। वह चाहे तो छोटे से छोटे गुनाहों की भी पूछगछ कर सकता है। यह उसकी खास मेहरबानी है कि वह उसे अनदेखा कर देता है लेकिन इसके बावजूद आदमी तक्रवा (परहेज़गारी), पाकी और तज़किये का दावा नहीं कर सकता। अल्लाह ही जानता है कि किसका कितना तज़किया हुआ है और किसके अन्दर कितना तक्रवा पाया जाता है। वह इन्सान के हालात से उसकी पैदाइश से पहले से वाक़िफ़ है। इसके बाद उसकी जो सीरत और किरदार रहा है वह भी उसके इल्म में है। आदमी जो भी अच्छा और नेक काम करता है वह अल्लाह की तौफ़ीक़ और मदद ही से करता है। इसलिए वह उसे अपना कारनामा नहीं बल्कि अल्लाह की मेहरबानी ही समझे।

## तज़किया अपने फ़ायदे के लिए है

यह बात हरगिज़ नहीं भूलनी चाहिए कि अगर आदमी अपना तज़किया करता है और अखलाक़ी पहलू से तरक्की करता है तो अल्लाह पर या उसके

रसूल पर कोई एहसान नहीं करता। इसमें खुद उसका फ़ायदा है। इससे उसकी दुनियावी ज़िन्दगी गन्दगी से पाक होगी और वह आखिरत में कामयाबी से हमकिनार होगा। कुरआन की सूरा-35, फ़ातिर में एक जगह कहा गया है कि आखिरत में किसी का बोझ कोई नहीं उठाएगा। गुनहगार अपने रिश्तेदारों को भी आवाज़ दे तो वे उसकी तरफ़ तवज्जोह न करेंगे। इसके बाद कहा गया है -

“(ऐ नबी) तुम सिर्फ़ उन्हीं लोगों को सावधान कर सकते हो जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं। जो शरूस् भी पाकीज़गी इख़तियार करता है वह अपने ही भले के लिए पाकीज़गी इख़तियार करता है। और पलटना तो सबको अल्लाह ही की तरफ़ है।”

(कुरआन, 35:18)

हकीकत यह है कि तज़किये में आदमी का अपना ही फ़ायदा है। अल्लाह तआला उसका मुहताज़ नहीं है। हाँ, जब वह गुनाहों से पाक-साफ़ होकर अल्लाह के दरबार में पहुंचेगा तो उसके असीम इनामों से फ़ायदा उठाएगा।

कुरआन मजीद की सूरा-29, अनकबूत में यही बात एक दूसरे मौक़े के लिए बयान हुई है कि कोई शरूस् अल्लाह का दीन क़बूल करता है, उसके लिए जिद्दोजुहद करता है और अपनी कुव्वतें लगाता है, तकलीफ़ें बरदाश्त करता है, कुरबानियाँ देता और मज़बूती से ज़मे रहने का सुबूत देता है तो उसमें खुद उसका फ़ायदा है। अल्लाह को इसकी ज़रूरत नहीं है। वह किसी के ईमान और अच्छे काम का मुहताज़ नहीं है। कहा गया -

“जो शरूस् जिद्दोजुहद करता है वह अपने फ़ायदे के लिए जिद्दोजुहद करता है। बेशक अल्लाह ज़हानवालों से बेनियाज़ है।”

(कुरआन, 29:6)

## तज़किये के लिए कोशिश की जाए

एक अहम सवाल यह है कि तज़किया कौन करे? कुरआन मजीद से मालूम होता है कि हर शरूस् को अपने तज़किये की कोशिश करनी चाहिए। जो अपना तज़किया करेगा वह कामयाब होगा। कहा गया -

“बेशक वह कामयाब हुआ जिसने अपना तज़किया किया।”

(कुरआन, 87:14)

यही बात बहुत-सी आयतों में बयान हुई है जो इसी किताब में गुज़र चुकी है। उनमें इनसान की जिम्मेदारी ठहराई गई है कि वह अपने नफ़्स का तज़किया करे। उसे हर तरह की गन्दगियों से पाक रखे और उसमें अच्छी ख़ूबियाँ पैदा करे। इस पहलू से तज़किया आदमी का व्यक्तिगत काम है। अगर उसके अन्दर इसका इरादा और हौसला नहीं है तो तज़किया हासिल नहीं हो सकता।

### अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने उम्मत का तज़किया किया

अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को तज़किये के लिए भेजा गया था। आप (सल्ल.) इस उम्मत के सबसे पहले तरबियत करनेवाले और सबसे बड़े तज़किया करनेवाले थे। आप (सल्ल.) ने अपने माननेवालों की सोच, फ़िक्र और अमल का सुधार किया। अल्लाह से उनका ताल्लुक मज़बूत किया। उनके अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा की। उनके अन्दर बेहतरीन अख़लाक़ पैदा किए। उनमें वे ख़ूबियाँ पैदा कीं जो पैदा होनी ज़रूरी थीं। उन्हें ख़ैर-उम्मत (उत्तम समुदाय) के मक़ाम तक पहुंचाया और उन्हें इस काबिल बनाया कि वे दुनिया की रहनुमाई और सरदारी कर सकें। आप (सल्ल.) उम्मत का काम सच्चे दिल और मन से करते थे और उसके एक-एक आदमी की भलाई चाहते थे। आप (सल्ल.) सबसे मुहब्बत करते थे। यह अल्लाह तआला का ईमानवालों पर बड़ा एहसान है कि उसने हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को उनकी रहनुमाई व हिदायत और इस्लाह व तरबियत के लिए भेजा।

(कुरआन, 3:163,164)

यानी ईमान का तक्काज़ा है कि इस महान उपकार की क़द्र की जाए और उससे फ़ायदा उठाया जाए।

## तज़किया अल्लाह अता करता है

तज़किया हकीकत में अल्लाह का इनाम है। उसकी तौफ़ीक ही से हर इनसान का तज़किया होता है। इसी लिए फ़रमाया गया कि तज़किया अपनी बरतरी के दावों से हासिल नहीं होता -

“बल्कि अल्लाह जिसका तज़किया चाहता है उसका तज़किया होता है।”

(कुरआन, 4:49)

तज़किये का ताल्लुक आखिरत से भी है। अल्लाह तआला अपने सच्चे बन्दों को कमज़ोरियों और कमियों से पाक-साफ़ करके जन्नत में पहुंचाएगा। जो लोग आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया को तरज़ीह दें और दुनियावी फ़ायदे के लिए अपने दीन को बेच डालें उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से यह तज़किया हासिल न होगा। यहूदी अपने किरदार से इस बात का सुबूत जुटा रहे थे कि वे इस तज़किये के हक़दार नहीं हैं। कहा गया -

“बेशक जो लोग छिपाते हैं अल्लाह की उतारी हुई किताब के एक हिस्से को और उसके बदले थोड़ी-सी क़ीमत वुसूल करते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ जहन्नम की आग भरते हैं; क़ियामत के दिन अल्लाह न तो उनसे बात करेगा और न उनका तज़किया करेगा; और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।”

(कुरआन, 2:174)

यही बात सूरा-3, आले-इमरान, आयत 77 में भी कही गई है।

कुरआन मजीद में तज़किये की निस्बत शरूख की तरफ़ भी है और अल्लाह के रसूल (सल्ल.) की तरफ़ भी। उसका ताल्लुक अल्लाह की ज़ात से भी है। हर इनसान से इस बात का मुतालबा है कि वह अपना तज़किया करे, यह उसकी ज़िम्मेदारी है। इसके बग़ैर वह कामयाब नहीं हो सकता। इसलिए तज़किये का मुख़ातब हर शरूख है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) तज़किये के लिए भेजे गए थे और आप (सल्ल.) ने इस उम्मत का तज़किया किया। इसलिए तज़किये का हुक़म आप (सल्ल.) से मुताल्लिक है। अल्लाह तआला की तौफ़ीक ही से इनसान तज़किया हासिल कर सकता है। इसलिए अल्लाह

तआला की ज्ञात की तरफ़ इसकी निस्बत की गई है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि इनसान अपना तज़किया करता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) उसकी रहनुमाई करते हैं और अल्लाह की तौफ़ीक़ और मदद से तज़किया हासिल होता है।

तज़किया एक ऐसा अमल है जो इनसान और इनसानी समाज के हर पहलू को अपने अन्दर समेटे हुए है। यह खुदा से करीब होने का और खुद को उसके हवाले कर देने का नाम है। यह अपनी शख्सियत को पूरी तरह इस्लाम के सांचे में ढाल देने का अमल है। इसके लिए बराबर तवज्जोह और मेहनत के साथ अल्लाह तआला से दुआ भी करनी होगी कि वह इस मुश्किल काम में हमारी मदद फ़रमाए। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) की दुआओं में से एक दुआ यह भी थी—

अल्ला-हुम-म आति नफ़सी तक्वाहा व ज़क्काहा, अन-त खैरुम-मन ज़क्काहा, अन-त वलिय्युहा व मौलाहा। (हदीसे क़ुदसी)

“ऐ अल्लाह! तू मेरे नफ़स को तक्वा अता फ़रमा। उसका तज़किया अता फ़रमा। तू ही उसका सबसे बेहतर तज़किया करनेवाला है। तू उसका सरपरस्त और मौला है।”

इस दुआ के साथ यह भी शामिल करें —

फ़ह-फज़हा बिमा तहफ़ज़ु बिहि इबा-द-कस्सालिहीन।

“तू उसकी इस तरह हिफ़ाज़त फ़रमा जिस तरह अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।”

